शेख़ फ़रीद – सबद ९९
कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥
फरीदा कचै भांडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥९६॥

सार: विकास के आरंभिक चरणों में सहयोग बहुत आवश्यक होता है क्योंकि शुरुआत इस में अक्सर दूसरों पर निर्भरता से होती है। जहाँ मार्गदर्शन से नई सूझ-बूझ मिल सकती है, वहीं उस सीख को कितनी गहराई से अपनाया जाता है, इसमें असली दृढ़ता छिपी होती है। उदाहरण के लिए, नदी के किनारे उगने वाले छोटे पेड़ को बढ़ने-फूलने के लिए पोषण मिलता है। लेकिन, अगर वह अपनी जड़ों को गहरा करना नहीं सीखता तब जिस मिट्टी के सहारे वह टिका होता है, वही नदी के तेज़ बहाव में बह सकती है जिससे उसका अस्तित्व ही ख़तरे में आ सकता है। इसलिए, निरंतरता बनाए रखने के लिए ऐसी नींव में मज़बूती से जमना ज़रूरी है जहाँ स्थिरता बाहरी सहयोग से नहीं बल्कि आंतरिक मज़बूती से मिले।

कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥
नदी के किनारे, एक नन्हा पेड़ कब तक सहारा बनाए रख सकता है। अर्थात यह कि जहाँ सीखने के लिए आरंभिक मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है, वहीं अंतर्दृष्टि को मज़बूत करना ही स्थायी विकास की कुंजी है।

फरीदा कचै भांडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥९६॥
फ़रीद कहते हैं कि कच्चे घड़े में पानी कब तक ठहर सकता है। यह दर्शाता है कि आंतरिक परिपक्वता के बिना, अनुभवों से प्राप्त ज्ञान बहुत जल्द ही ढह जाता है। (९६)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद एक कच्चे घड़े का उदाहरण देकर यह पूछते हैं कि उसमें पानी कब तक ठहर सकता है। यह प्रश्न अंतर्मुखी होकर, विचार प्रेरित करता है कि जब तक स्वयं अज्ञानी रहता है तब तक जीवन से सीखी गई कोई भी बात मन में ठहर नहीं सकती। जिन बातों को हम अपनी अंतरात्मा में दृढ़ता से नहीं बिठाते, वह धीरे-धीरे बाहर निकल जाती हैं। जीवन हमें अनुभव दे सकता है, अंतर्दृष्टि क्षण भर के लिए हमें छू सकती है परंतु जब तक भीतर से परिपक्वता न आए तब तक यह बातें स्थायी नहीं हो पातीं। यह चिंतन इस ओर संकेत करता है कि सत्य केवल उसके संपर्क में आने से ही मन में नहीं ठहरता बल्कि उसे थामे रखने की क्षमता विकसित करने से ही वह हमारे भीतर बना रहता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com